ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, **PP-385-387,** YEAR-2014

संस्कृत काव्य में शब्दों की निरुक्ति की आवश्यकता और महत्व : कालिदास के विशेष संदर्भ में

❑ **डॉ0 बृजमोहन शुक्ल**

सार– *निरुत्तर शब्द निर्वचत (क्त) से निष्पन्न हुआ है । जहां निर उपसर्ग है तथा इसका अर्थ है पूरी तरह से, वच धातु है और इसका अर्थ है कहना तथा क्त प्रत्यय है जिसके दो अर्थ हैः– भाव और करण। इस प्रकार इस शब्द का समुचित अर्थ होता है . क. पूरी तरह से कहना, ख. पूरी तरह से जिसके द्वारा कहा जाता है वह शास्त्र। वेदांगो में रिरुक्ति को चौथा स्थान प्राप्त हुआ है । जहां इसे शब्दों को स्पष्ट करने की एक विशिष्ट प्रक्रिया तथा उस पर लिखे गए विशिष्ट ग्रंथ के रूप में वर्णित किया गया है। जैसा कि सायण ने अपने ऋग्वेदभाष्यभूमिका में इसका लक्षण इस प्रकार स्पष्ट किया है कि 'अर्थ ज्ञान के लिए जहां पदों का समूह कहा गया है वही निरुक्त है'[1]। अतः यह कहना कदाचित अनुचित न होगा कि अन्य वेदांग जहां वेद के बहिरंग से ही संबंध रखते हैं, निरुक्त उनके अंतरंग से संबद्ध है। निरुक्तभाष्य शैली के गद्य में है, जिससे अर्थावगमन में बड़ी सहायता मिलती है। यास्क तो इस प्रकार व्यक्त करते हुए प्रतीत होते हैं कि निरुक्त स्वयं निघंटु नामक वैदिक कोष का भाष्य है तथा उनके द्वारा लिखा हुआ है। इन्हीं शब्दों पर उन्होंने अपना ध्यान केंद्रित किया है तथा अर्थ तक पहुंचने की चेष्टा की है। अर्थ ज्ञान के लिए वे उस शब्द से संबंधित धातु तथा उसके अर्थ का आश्रय लेते हैं यही निरुक्त की आधारशिला है।*

निरुक्त शास्त्र का अभ्युदय वैदिक देवविद्या के सहायक के रूप में हुआ था। ब्राह्मणों में निरुक्त शब्द का प्रयोग देवताओं का स्वरूप निर्वाचन के अर्थ में हुआ है न कि जिस देवता या उससे संबंधित वस्तु आदि का स्वरूप स्पष्ट व्याख्यात है उसको निरुक्त कहा गया है । अतः ब्राह्मणों में देव विद्या के संबंध में निरुक्त शब्द का प्रयोग सर्वत्र हुआ है। यास्क की निरुक्ता से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि निरुक्ता के दो कार्य हैं .

1. शब्दों का भाषाशास्त्रीय निर्वाचन
2. वैदिक देवताओं का स्पष्टीकरण

निरुक्त के 14 अध्यायों में से केवल 6 अध्याय अर्थात आधे से भी कम भाग में शब्दों का भाषाशास्त्री निर्वचन और शेष भाग में देवताओं के स्वरूप का स्पष्टीकरण किया गया है।

ब्राह्मणों में निर्वाचन बहुतायता किया गया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि ब्राह्मण निरुक्त शास्त्र से भलीभांति परिचित हैं। अंतर यही है कि वहां शब्दशास्त्र परक अर्थ में निरुद्ध शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है पर इसके आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि उस समय निरुक्त शब्द का प्रयोग शब्दशास्त्र अर्थ में नहीं होता था। इस विवरण के आधार पर हमारा विचार है कि निरुक्त शास्त्र का आरंभ भाषाशास्त्रीय अध्ययन के द्वारा वैदिक देवताओं का स्वरूप स्पष्ट करने वाली देव विद्या के रूप में हुआ होगा । भाषाशास्त्र और देवविद्या यह दोनों ही निरुक्त शास्त्र के विषय रहे होंगे। कालांतर में वेदार्थज्ञान में निरुक्तशास्त्र की उपयोगिता जैसे–जैसे विदित होती गई यह देव विद्या की अधीनता से मुक्त होता गया तब इसके भाषाशास्त्रीय स्वरूप को महत्व मिलता गया। देवविद्या भी चुकीं वैदिक ही है अतः उसका ज्ञान भी वेदार्थ ज्ञान की है। फलतः देव विद्या के संबंध में भी निर्वाचन का महत्व अक्षुण्य ही बना रहा।[3]

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रारंभिक काल में

प्रवक्ता, जगदीश प्रसाद पाण्डेय स्मारक पी. जी. कॉलेज देवपुर अड्डा बाजार –महाराजगंज (उ0प्र0) भारत

निर्वाचन या निरुक्तशास्त्र का विषय केवल वैदिक देवताओं का स्वरूप विवेचन था, आगे चलकर इसका प्रधान विषय वेदार्थज्ञान में सहायक भाषा शास्त्रीय अध्ययन हो गया तथा आज की परिस्थिति में निरुक्त शास्त्र इसी कड़ी में एक कदम और आगे बढ़ कर लौकिक शब्दों का भाषा शास्त्रीय अध्ययन करना है तथा बदलते हुए परिवेश में भाषा का अर्थशास्त्रीय दृष्टि से जो विघटन हो रहा है अर्थविज्ञान की दृष्टि से इसे स्पष्ट करता है, शब्दों की अर्थव्यवस्था को यथावत कायम रखने के लिए शब्दों की निरुक्ति अति आवश्यक है।

अध्ययन में कुंठित आज की मानव मानसिकता अर्थ के विषय में कितनी सावधान है यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व की कालिदास की रचनाओं में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ तथा आज की भाषाओं के बीच प्रयुक्त उन्ही शब्दों का अर्थ अपने मूल अर्थ से बहुत दूर हो चुका है तथा उनके अर्थों में अंतर होता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में यह नितांत आवश्यक हो गया है कि इन शब्दों की निरुक्ति करके शब्दों को उनके अर्थों की सार्थकता का जो क्षरण हो रहा है उससे बचाया जा सके।

हमारे प्रकृत अध्ययन की यही आवश्यकता है इसकी प्रधान उपयोगिता है कालिदास द्वारा प्रयुक्त शब्दों का अर्थ ज्ञान कराना और यह कार्य लौकिक शब्दों का अर्थ निर्धारण किए बिना नहीं हो सकता अतः लौकिक शब्दों का अर्थ निर्धारण करना ही निरुक्ति का प्रधान लक्ष्य है।

दूसरी अन्य चीजों की तरह मानवीय आवश्यकता बदलती वैचारिक विभिन्नता तथा समय के साथ परिवर्तित होती हुई विचारधारा पर साहित्य की धुरी चलती है इसलिए जब हम सदियों पुराना साहित्य पढ़ना शुरू करते हैं तो कतिपय शब्दों के प्रचलित अर्थों को देखकर भ्रम होने लगता है, क्योंकि वर्तमान में ऐसे शब्दों का अर्थ परिवर्तित हो चुका होता है। ऐसे में हमारे विचार दुविधा की स्थिति में हो जाते हैं क्योंकि हमें अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति नहीं होती है, इसका कारण यह है कि ऐसा शब्द तत्कालीन साहित्य और सामाजिक परिवेश में प्रचलित अर्थों की ही अभिव्यक्ति करता है। हम उसका अर्थ आज के परिवेश में निकालना चाहते हैं तो हमें कठिनाई होती है इसका कारण यही होता है कि इन शब्दों में अर्थ परिवर्तन तथा इनके संरचनात्मक रूप में परिवर्तन दिखाई हो गया रहता है। तब इन्हें समझने में हमें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस पर भी हमारी बुद्धि अर्थ निकटता के घेरे में नहीं पहुंच पाती है। यह कठिनाई आज लौकिक संस्कृत शब्दों के साथ बहुसः उठानी पड़ती है विशेषकर कालिदास के शब्दों में तो हमें विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तब हम व्याख्यात्मक लेख पर आश्रित हो जाते हैं।

प्रायः व्याख्यात्मक लेख हमे अरूचिकर लगने लगते हैं और हमारी गलती संख्या में परिवर्तित हो जाती है और हमारे विचारों में द्वंद छिड़ जाता है।

एक व्यक्ति जो साहित्यिक संस्कृत का अध्ययन करता है वह कभी ऐतिहासिक बदलाव पर ध्यान नहीं देता है। आज तो संस्त तो वैसे ही अग्रह्य है, अल्पज्ञता के कारण बार–बार शब्दकोश का सहारा लेना पड़ता है।

ऐसे में सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति प्रायः कालिदास के अर्थों का गलत अर्थ समझ बैठता है क्योंकि शब्दों का अर्थ परिवर्तित हो चुका रहता है। सामान्य रूप से समान दिखाई देने वाले शब्दों के अर्थ में बहुत अंतर हो गया रहता है, लेकिन हम उनके विषय में अच्छी तरह नहीं जानते हैं। स्थिति यह है कि हम गलत प्रयोग करने से भी नहीं रुकते क्योंकि हमें तो अर्थ ज्ञान के अभाव में वे हीठीक लगते हैं। यदि हम ठीक कारणों का अध्ययन करते तो हमें अवश्य ही अर्थ समझने में कठिनाई नहीं होती। जब सही गलत का ज्ञान रहे तभी अंतर स्पष्ट कर सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में सामान्यतया हम अपने विवेक को भी धोखा दे डालते हैं और गलत प्रयोग करते रहते हैं। कालिदास के शब्दों अथवा कालिदास के समय प्रचलित शब्दों का आज कितना

अर्थ बदल गया है,या वे हमारी समझ की सीमा से कितने दूर हो गए हैं या आज के परिवेश में सामान्यतया हम वहां पहुंच ही नहीं सकते। इसे निम्न शब्दों के उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है:

१. शब्द – अकाल४

अर्थ– आनियत काल,

परिवर्तित अर्थ . दुर्भिक्ष

2. शब्द– पराग

अर्थ– पुष्पराज संस्कृत शब्दकोश के अनुसार कालिदास धूलि अर्थ लेते हैं।

'प्रतापो३३३तरम' ।५

परिवर्तित अर्थ .हिंदी में पुष्प की परागकण सुगंध

३. शब्द– परामर्श

अर्थ– कालिदास के समय ग्रहण करना झुका देना बाधा विघ्नों बल। 'अपराध तप३३.. मान्यों' ।६

परिवर्तित अर्थ– हिंदी में आलोचना, विचार, राय ३.

४. शब्द– प्रतिष्ठा

अर्थ– निवास करना, ठहरना, परिस्थिति३३. मानानिषाद ३३३. समा६।

५. शब्द– प्रसन्न

अर्थ– शुद्ध,निर्मल, उज्जवल, चमकीला ३..

परिवर्तित अर्थ . आनंद देना सुखी होना आदि ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि कालिदास के शब्दों का अथवा उस समय प्रचलित शब्दों का अर्थ आज कितना बदल गया है या वह हमारी समझ की सीमा से कितनी दूर हो गए हैं या आज के परिवेश में सामान्यतया हम वहां पहुंच नहीं पा रहे हैं इसलिए कालिदास के रचनाओं में प्रयुक्त शब्दों की निरुक्ति वर्तमान समय में साहित्य के अध्ययन के लिए अत्यंत आवश्यक है। जिससे हम कालिदास के साहित्य में प्रयुक्त शब्दों के वास्तविक अर्थों को समझने में समर्थ हो सकें। क्योंकि भाषा में शब्दों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा का विशाल महालय वर्णों की मिट्टी से बने शब्दों के ईंटों से ही बना हुआ है। भाषा का व्याकरण करने वाले शास्त्र के लिए प्रचलित शब्दानुशासन नाम भी शब्दों के इसी महत्व को प्रकट करता है। निघंटुकार ने भी इसी को दृष्टि में रखकर निघंटु में वैदिक शब्दों का समाम्नान किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अर्थावबोध निरपेक्षता पदजातम पत्रोक्तम तान्निरुक्त।
2. द्र० निरुक 2/१: अर्थनित्यः परीक्षेत केनविद वृत्तिसामान्येन।
3. साहित्यदर्पण 2/१। वाक्यम स्याद योग्यता क्षासत्तियुक्त पदोच्छ्यः।
4. ताता चपद्वितीये वहति रणनधूरा को भयास्यवकाशः। वेणीसंहार,३/५.
5. अभि० ७/३३, छाया तु शुदे तू दर्पणतले शुदावकासा।
6. रघु०17/33.